प्रातः क्लास 17/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्ति। मीठे2 बच्चों को बाप ने अभी घर याद दिलाया है। भल भक्तिमार्ग में भी घर को याद करते हैं; परन्तु वहाँ कब जाना है, कैसे जाना है वह कुछ भी नहीं जानते। कल्प की आयु लाखों वर्ष कह देने कारण घर भी भूल गया है। समझते हैं लाखों वर्ष यहाँ ही पार्ट बजाते हैं। तो घर भूल जाते हैं। अभी बाप याद दिलाते हैं बच्चे घर तो बहुत नजदीक है। अभी चलेंगे अपने घर? हम तुम बच्चों के बुलावे पर आया हूँ। चलेंगे? कितनी सहज बात है। भक्तिमार्ग में तो पता भी नहीं पड़ता कि कब मुक्तिधाम जावेंगे। मुक्ति को ही घर कहा जाता है। लाखों वर्ष कह देने कारण सभी भूल जाते हैं। बाप को भी तो घर को भी भूल जाते हैं। लाखों वर्ष डालने से बहुत फर्क पड़ जाता है। अन्धे बन अज्ञान नींद में जैसे सो जाते हैं। किसको भी समझ में नहीं आता। भक्तिमार्ग में घर कितना दूर बताते हैं। बाप कहते हैं वाह। मुक्तिधाम तो अभी जाना है। ऐसे थोड़े ही है तुम कोई लाखों वर्ष भक्ति करते हो। तुमको भी पता नहीं है भक्ति कब से शुरू होती है। लाखों वर्ष की हिसाब करने की तो दरकार ही नहीं। बाप को और घर को भूल जाते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है; परन्तु नाहक इतना दूर कर देते हैं। अभी बाप कहते हैं बच्चे घर तो बिल्कुल नजदीक है। अभी मैं आया हूँ तुमको ले चलने। घर चलना है; परन्तु पवित्र भी जरूर बनना है। गंगा स्नान तो तुम करते आये हो; परन्तु पवित्र तो नहीं बने हो ना। अगर पवित्र बनते तो घर चले जाते; परन्तु तुमको घर का भी पता नहीं है। तो पवित्रता का भी पता नहीं है। आधा कल्प से भक्ति की है तो भक्ति को छोड़ते ही नहीं। अब बाप कहते हैं भक्ति पूरी होती है। भक्ति में तो अपरम्अपार दुख रहता है। ऐसे नहीं कि तुम बच्चों ने लाखों वर्ष दुख देखा है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। सच्चा–2 दुख तो तुमने 1500 वर्ष भोगा है। जब कि जा(स्ती) विकारों में गंदे बने हो। पहले जब रजो में थे कुछ समझ थी। मास में भी एक बार मुश्किल जाते होंगे। और फिर जास्ती टाइम लगता होगा। अभी तो बहुत जास्ती हो गया है। तो बाप बच्चों को कहते हैं सुखधाम चलना है। जन्म–जन्मान्तर के पाप सिर पर हैं। अभी मुझे याद करो तो पाप कट जायें। याद से ही बड़ी खुशी रहेगी। जो बाप तुमको आधा कल्प सुखधाम ले जाते हैं उनको याद करना है। बाप कहते हैं तुमको ऐसा बनना है। तो एक तो पवित्र बनो और चरित्र सुधारो। विकारों को कहा जाता है भूत। लोभ का, मोह का भी भूत होता है। यह भूत बहुत अशुद्ध है। मनुष्यों को एकदम गंदा बना देती है। लोभी भी बहुत पाप कराते हैं। यह 5 विकार बहुत कड़े भूत हैं। इन सभी को छोड़ना भी बड़ा मुश्किल हो जाता है। लोभ को छोड़ना भी ऐसा मुश्किल जितना काम को छोड़ना मुश्किल होता है। छोड़ते ही नहीं। सारी आयु बाप समझाते हैं तो भी मोह की रग टूटती ही नहीं। क्रोध भी मुश्किल छूटता है। कहते हैं बच्चों को क्रोध आया। नाम तो क्रोध का लेते हैं ना। कोई भी भूत न आये। अभी उन पर विजय पानी है। बाप कहते हैं जब तक मैं हूँ पुरुषार्थ करते रहो। बाप कितना वर्ष रहेंगे। जबकि गाया हुआ है प्रजापिता ब्रह्मा भी 100 वर्ष बाद चले जाते हैं। बाप आते ही हैं 60 वर्ष के बाद। ब्रह्मा चला जावेगा तो बाप भी चला जावेगा। तो 40 वर्ष बैठ समझाते हैं। अच्छा ही टाइम देते हैं। 40 वर्ष कोई कम नहीं है। सृष्टि चक्र को जानना तो बहुत ही सहज है। सात दिन में सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है बाकी जन्म–जन्मान्तर के पाप कटने में देरी लगती है। यह ही मुश्किलात है। इसके लिए बाबा टाइम देते हैं। माया का अपोज़ीशन बहुत होता है। एकदम भुला देती है। यहाँ बैठते हैं तो भी सारा समय याद में थोड़े ही बैठते हैं। बहुत तरफ बुद्धि चली जाती है। इसलिए ही 40 वर्ष का टाइम देते हैं। मेहनत कर कर्मातीत अवस्था को पाना है। पढ़ाई तो सहज है। सेन्सीबुल बच्चा हो तो 7 दिन में सारा नॉलेज समझ सकते हैं। यह 84 का चक्र कैसे फिरता है। बाकी पवित्र बनने में है मेहनत। इस पर ही कितने हंगामे होते हैं। समझते हैं बात तो राइट है। पहले हम ग्लानि करते थे कि यह ब्रह्माकुमारियाँ–बहन भाई बनाती हैं; परन्तु बात तो बरोबर राइट है। जब तक हम प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे न बने तब तक पवित्र कैसे

रह सकेंगे। क्रिमनल आई सिविल आई कैसे बन सकती। यह युक्ति बड़ी अच्छी है। हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ तो बहन–भाई हो गये ना। इसमें बड़ी मदद मिलती है सिविल आई बनाने में। ब्रह्मा का कर्तव्य भी है ना ब्रह्मा द्वारा देवी–देवता धर्म की स्थापना अथवा मनुष्य को देवता बनाना। बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। तो समझाने की कितनी मेहनत करनी पड़ती है। बाप का परिचय देने लिए ही सेन्टर्स खोले जाते हैं। बेहद के बाप से बेहद का वरसा लेना है। भगवान तो निराकार है। कृष्ण तो देहधारी है। उनको भगवान कह नहीं सकते। कहते भी हैं भगवान आकर भक्ति का फल देंगे; परन्तु भगवान का परिचय ही नहीं है। भगवान के बदली पूरे 84 जन्म वाले का नाम ठोक दिया है। कितना तुम समझाते हो फिर भी समझते नहीं हैं। समझाया जाता है देहधारी तो पुनर्जन्म में जरूर आते हैं। उनसे तो वरसा मिल न सके। आत्मा को एक ही परमपिता परमात्मा से वरसा मिलता है। मनुष्य मनुष्य को मुक्ति–जीवनमुक्ति दे न सके। यह वरसा पाने लिए तुम बच्चे पुरुषार्थ कर रहे हो। इस बाप को पाने लिए तुम कितना भटकते हो। पहले तो सिर्फ एक शिव की पूजा करते थे, और कोई तरफ जाते नहीं थे। वह थी अव्यभिचारी भक्ति। औरों के मंदिर आदि इतने थे ही नहीं। अभी तो देखो देवताओं के चित्र कितने जगह रख दिये हैं। ढेर के ढेर चित्र, मंदिर आदि बनाते हैं। भक्तिमार्ग में तुमको कितना मेहनत करनी पड़ती हैं। मनुष्यों की बुद्धि में भक्तिमार्ग के शास्त्रों की बातें ही भर गई हैं। शास्त्र ही बैठ पढ़कर सुनाते हैं। शास्त्र ऐसे कहते हैं। ढेर शास्त्र हैं। वास्तव में भारत के इतने शास्त्र होनी न चाहिए। हरेक धर्म का एक शास्त्र होनी चाहिए। एक धर्म का एक स्थापना करने वाला उनका एक शास्त्र। क्रिश्चयन का एक शास्त्र। बौद्धियों का एक शास्त्र है ना। धर्म शास्त्र अर्थात् धर्म स्थापन करने का एक शास्त्र। बा.... उनमें कोई रास्ता नहीं। गति सद्गति का रास्ता तो एक बाप ही बताते हैं। शास्त्रों में है नहीं। क्योंकि वह है भक्ति। कितने ढेर शास्त्र, मंदिर आदि बनाते हैं। वास्तव में मंदिर सिर्फ होते हैं देवी देवताओं के जो सतयुग में रहते हैं। और कोई मनुष्य का मंदिर बनता ही नहीं; क्योंकि मनुष्य तो हैं ही पतित। वह हैं पावन देवताएँ। उनको तुम मनुष्य नहीं कहेंगे। पतित मनुष्य पावन देवताओं की पूजा करते हैं। भल हैं वह सभी मनुष्य; परन्तु उनमें दैवीगुण हैं। जिनमें दैवीगुण न हैं वह उनकी पूजा करते हैं। तुम खुद ही पूज्य थे। फिर पुजारी बने हैं। आपे ही पूज्य..... पहले थी अव्यभिचारी भक्ति फिर व्यभिचारी भक्ति हो गई। मनुष्य की भक्ति करना यह तो 5 तत्व की भक्ति करना है। शरीर 5 तत्वों का बना हुआ है ना। अभी बच्चों को अपने मुक्तिधाम चलना है। जिसके लिए इतनी भक्ति की है। अभी तुमको अपने साथ ले चलता हूँ। तुम सतयुग में चले जावेंगे। बाप आये ही हैं पतित दुनिया से पावन दुनिया में ले जाने। पावन दुनिया है ही दो। मुक्ति और जीवनमुक्ति। बाप कहते हैं मीठे–2 बच्चों मैं कल्प–2 संगमयुग आता हूँ। तुम भक्ति मार्ग में कितने दुख उठाते आये हो। पहले जब शिव की भक्ति करते थे तो इतना धक्के खाते नहीं थे जितना अभी धक्का खाते हो। गीत भी है ना चारों तरफ लगाये फेरे फिर भी हरदम दूर रहे..... किससे? बाप से। बाप को ढूढ़ने लिए जन्म व जन्म फेरी पहने; परन्तु फिर भी बाप से दूर रहे। इसलिए बुलाते हैं हे पतित–पावन आओ आकर पावन बनाओ। बाप के सिवाय तो ऐसा कोई बना न सके। तो यह खेल ही 5000 वर्ष का है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं।

यह भी जानते हैं ड्रामा अनुसार सभी पुरुषार्थ करते ही रहते हैं। जिस प्रकार कल्प पहले किया है। उसी अनुसार ही राजधानी स्थापन हो रही है। सभी एक जैसा तो नहीं पढ़ेंगे। यह पाठशाला है ना। राजयोग की पढ़ाई है। जो देवी देवता धर्म के होंगे वह निकल आवेंगे। मूलवतन में भी जो संख्या है वह भी एक्युरेट होगी ना। कम जास्ती नहीं हो सकती; परन्तु गिनती हो नहीं सकती। नाटक में एक्टर्स का अन्जाद बिल्कुल पूरा है; परन्तु समझ नहीं सकते हैं। जितने भी हैं उतने एक्युरेट हैं। फिर भी वही आकर पार्ट बजावेंगे। फिर मूलवतन में भी अपने–2 सेक्शन में चले जावेंगे। फिर हम आते हैं नई दुनिया में। बाकी वहाँ सभी चले

जावेंगे। अभी कोई गिनती करे तो कर सकते हैं। शायद बाबा बता भी दे कि कितने हैं। अभी तो बाप कहते हैं मैं तुमको बहुत गुह्य–2 प्वाइंट्स सुनाता हूँ। शुरू के और अभी की समझानी में कितना फर्क पड़ जाता है। पढ़ाई में टाइम लगता है ना। फट से कोई आई॰सी॰एस॰ नहीं बन जावेगा। नम्बरवार पढ़ाई होती है। बाप कि(तना) सहज कर समझाते हैं। तो मनुष्यों की बुद्धि में सहज रीति बैठ सके। पहले और अब की समझानी में कितना फर्क है। दिन प्रतिदिन नये–2 प्वाइंट्स समझाते रहते हैं। अब बाप कहते हैं मुझ पतित–पावन बाप को बुल.... हैं, मैं आया हूँ तो तुम पावन बनो ना। अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। सतोप्रधान जरूर बनना है। फिर यहाँ आना पड़ेगा पार्ट बजाने। बाप कहते हैं आत्मा पतित बनी इसलिए पतित–पावन बाप को याद करती है पावन बनने लिए। कितना वन्डर है। इतनी छोटी सी आत्मा कितना पार्ट बजाती है। इसको कुदरत कहा जाता। उनको देखा नहीं जा सकता। कोई कहते हैं हम परमात्मा का सा॰ करें। बाप कहते हैं इतनी छोटी बिन्दी का तुम सा॰ क्या करेंगे। आत्मा को भी कोई आँखों से देख नहीं सकते हैं। बुद्धि से जानते हैं। मैं आत्मा इस शरीर में हूँ। मैं बिल्कुल छोटी बिन्दी हूँ। जानने लायक हूँ। बाकी देखना तो मुश्किल है। आत्मा को यह सभी कर्म–इन्द्रियाँ मिली हुई है पार्ट बजाने लिए। जितना पार्ट बजाते हैं यह वन्डर है ना। कब भी आत्मा घिसती नहीं। यह है अविनाशी। ड्रामा भी अविनाशी बना ब(बनाया) है। कब बना, यह पूछ नहीं सकते। इन्हों को अनादि कहा जाता है। मनुष्यों से पूछो रावण को कबसे जलाते आये हो, शास्त्र कब से पढ़ते आये हो, तो कह देते अनादि। पता नहीं। मुँझे हुए हैं। कुछ भी समझते नहीं हैं। बाप बैठ समझाते हैं हूबहू जैसे बच्चों को पढ़ाते हैं। तुम जानते हो हम बिल्कुल ही बेसमझ थे। फिर बेहद की समझ आ गई है। वह होती है हद की पढ़ाई। यह है बेहद की। आधा कल्प है दिन, आधा कल्प है रात। 21 जन्म तुम रिंचक भी दुख नहीं पाते हो। कहते हैं ना तुम्हारा बाल भी बांका न हो। कोई दुख दे न सके। नाम ही है सुखधाम। यहाँ तो सुख है नहीं। मूल बात है प्रैक्टिस की। कैरेक्टर्स अच्छी चाहिए। बच्चों को हरेक बात क्लीयर कर समझाई जाती है। नुकसान और फायदा होता है ना। अभी तो बाप कहते हैं फायदे की बात ही छूट्टी। अभी तो नुकसान ही नुकसान होने का है। विनाश का समय आ जाता है फिर देख(ना) क्या होता है। बरसात नहीं पड़ती तो अनाज की कितनी महंगाई हो जाती है। भल कितना भी कहते हैं 3 वर्ष बाद बहुत अनाज होगा फिर भी अनाज बाहर से मंगाते रहते हैं। खटाक मारते रहते हैं। ऐसा समय आना है एक दाना भी न मिलेगा। इतनी आपदाएँ आनी है। उनको ईश्वरीय आपदाएँ कहते हैं। बरसात न पड़ती तो अकाल जरूर पड़ेगा। सभी तत्व आदि भी बिगड़ने वाले हैं। जगह तो बरसात नुकसान भी कर देती है। कुदरती आपदाएँ भी कम नहीं हैं। तुम बच्चे समझते हो बाप आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। तुम्हारी एम ऑबजेक्ट है यह। फिर से तुमको नर से ना0 बनाते हैं। यह बेहद का पाठ बेहद का बाप ही पढ़ाते हैं। जो जैसा पढ़ेगा वैसा पद पावेगा। बाप तो पुरुषार्थ कराते हैं। पुरुषार्थ कम करेंगे तो पद भी कम पावेंगे। टीचर तो स्टुडेन्ट को समझावेंगे ना। दूसरे को जब आप समान बनाते हैं तब मालूम पड़ता है यह अच्छा पढ़ते और फिर पढ़ाते हैं। मूल है ही याद की यात्रा। सिर पर पापों का बोझा बहुत है मुझे याद करो तो पाप भस्म हों। यह है रूहानी यात्रा। छोटे बच्चों को भी यह सिखाओ कि शिवबाबा को याद करो। उनका भी हक है। यह नहीं समझेंगे कि अपन को अत्मा समझ बाप को याद करना है। नहीं शिवबाबा सिर्फ याद करेंगे। मेहनत करने से उन्हों का भी कल्याण हो सकता है। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

हलो सर्व सेन्टर निवासी ब्राह्मण कुल भूषणों प्रति हम सभी मधुबन निवासियों का यादप्यार ले बापदादा सहित बहुत बहुत स्वीकार करना जी। अच्छा विदाई।

– : शिवबाबा याद है? : –